

श्री इन्द्राक्षी भगवती

(पूजा-संग्रह)

: प्रकाशक :

श्री राम शैव (त्रिक्) आश्रम
(फतेह-कदल, श्रीनगर काश्मीर)
शिविर, गोल-गुजराल, जम्मू

मूल्य :-14/-

प्रस्तावना

श्री इंद्राक्षी स्तोत्र का पाठ काश्मीरी पंडित आदिकाल से करते आ रहे हैं। शायद ही कोई ऐसा घर होगा जहां के वयोवृद्ध को यह स्तोत्र कंठस्त न हो और जहां इस स्तोत्र का पठन नित्य नियम से प्रातः एवं सायंकाल पर न होता होगा। अर्थात् यह हमारी जाति के लिए उत्तराधिकारी स्तोत्र बना है। क्योंकि इस स्तोत्र के नित्य एवं नियमानुसार पठन करने से प्रत्येक भक्तवर के आध्यात्मिक, आदि-दैविक तथा आदि-भौतिक तापों का निवारण होता है तथा मनोवांच्छित फल की प्राप्ती भी प्रदान होती है। शैव-शास्त्रों में भी श्री जगदम्बा के चरण कमलों की उपासना को ही प्रधान माना गया है। तथा काश्मीर प्रान्त में प्राचीन काल से यहां की हिन्दु जनता ने शक्ति-पूजा को ही प्रधान रूप से अपनाया है। महाशक्ति-जगदम्बा के नाना प्रकार के रुपों का शास्त्रों में वर्णन किया गया है तथा प्रत्येक स्वरूप की उपासना के लिए भिन्न-भिन्न नियम व पद्धति दी गई है।प्रत्येक उपासना के सम्पूर्ण होने पर श्री **अभयङ्करी** (श्री इन्द्राक्षी) देवी की विधिपूर्वक उपासना अनिवार्य है। तथोपरान्त अमुक अनुष्ठान सम्पूर्ण एवं फल-हित माना जाता है।

काश्मीरी पंडितों को अपनी मातृभूमि से 1990 ई. में अकस्मात निष्कासित होना पड़ा। इस निष्कासन से उन्हें सब से बड़ी हानि यह हुई कि वे अपने साथ अपने बहुमूल्य पैत्रिक ग्रन्थ नहीं ला सके। देश के विभिन्न प्रदेशों में अस्थायी रूप से

रहते अब काफी समय हो चुका है, परन्तु हर समय, कहना चाहिये हर घड़ी, इन पैत्रिक ग्रन्थों की कमी सताती रहती है। इसी कमी को पूरा करने के लिये, तथा साधकों एवं सम्पूर्ण जनहित के लिये श्री राम शैव (त्रिक्) आश्रम (फतेहकदल, श्रीनगर) शिविर गोल गुजराल, जम्मू समय-समय पर ऐसी ही उपयोगी पुस्तकों को पुनः प्रकाशित करने का प्रयास कर रहा है। उसी प्रयास की श्रङ्खला की एक कड़ी के रूप में यह पुस्तिका प्रकाशित की गई है। इस में श्री इन्द्राक्षी भगवती का स्तोत्र, पाठ, पूजा, कवच, यंत्र, मंत्र, ध्यान एवं चित्रित रुपी ध्यान तथा प्रथम बार श्री इन्द्राक्षी भगवती नामावली का संकलन किया गया है, जो कि होम एवं पाठ के लिए उपयुक्त है।

दो शब्द मूल मंत्र के जप के बारे में।

शास्त्रों में जप की महिमा का बहुत वर्णन किया गया है। सब यज्ञों की अपेक्षा जप यज्ञ को श्रेष्ठ बतलाया गया है। भगवान श्री कृष्ण ने भगवदगीता में कहा है

"यज्ञानां जपयज्ञोस्मि"

उपासना में जप का अत्याधिक महत्व है। प्रत्येक पूजा में उपास्य के मंत्र का जप अनिवार्य है जैसे

एकदा वा भवेत्पूजा न जपेत पूजनं बिना।
जपान्ते वा भवेत् पूजा पूजान्ते वा जपेत मनुम।।

अतः देवी के मूल मंत्र का जप करना जरूरी है। कम से कम

एक माला कीजिये (अर्थात 108 बार) - प्रधान रूद्रों की संख्या सौ है, भैरवों की संख्या आठ है। कुल मिलाकर 108 की संख्या होती है।

श्री इन्द्राक्षी-नामावली के इस रूप का निर्माण प्रकाण्ड एवं गृहस्थी साधू आदरणीय स्वर्गीय पंडित रघुनाथ जी कोकिलू (बायगाश जी) के निर्देश अनुसार किया गया है, उन्हें हम सादर पूर्वक श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।

इस बहुमूल्य पुस्तिका का प्रकाशन माहत्मा पंडित काशी नाथ जी कौल की प्रेरणा एवं मार्ग दर्शन के कारण ही सम्भव हो सका है।

इस पुस्तिका के बनने के सम्बंध में श्री मखल लाल कोकिलू, श्री नरेश कुमार जाला (नन्ना जी) तथा डा. तेज कृष्ण ज़ाड़ू के योगदान के लिए वे सब धन्यवाद तथा आर्शिवाद के पात्र बने हैं।

श्री स्वामी जी महाराज हम सब का कल्याण करें।

सम्पादक मण्डल

श्री राम शैव (त्रिक्) आश्रम

(फतेह-कदल, श्रीनगर, काश्मीर)

शिविर गोल-गुजराल, जम्मू

तिथि : आषाढ़ कृष्णपक्ष सप्तमी 5077 सप्तर्षि: सं.
तदानुसार-13 जून 2001 ई. सं.
बुधवासरे।

ॐ श्री गणेशाय नमः

मार्जन............... पूर्वाभिमुख होकर देहशुद्धि के लिए सिद्धासन में बैठकर नीचे लिखे मंत्र को पढ़ते हुए अपने शरीर पर जल छिड़कें।

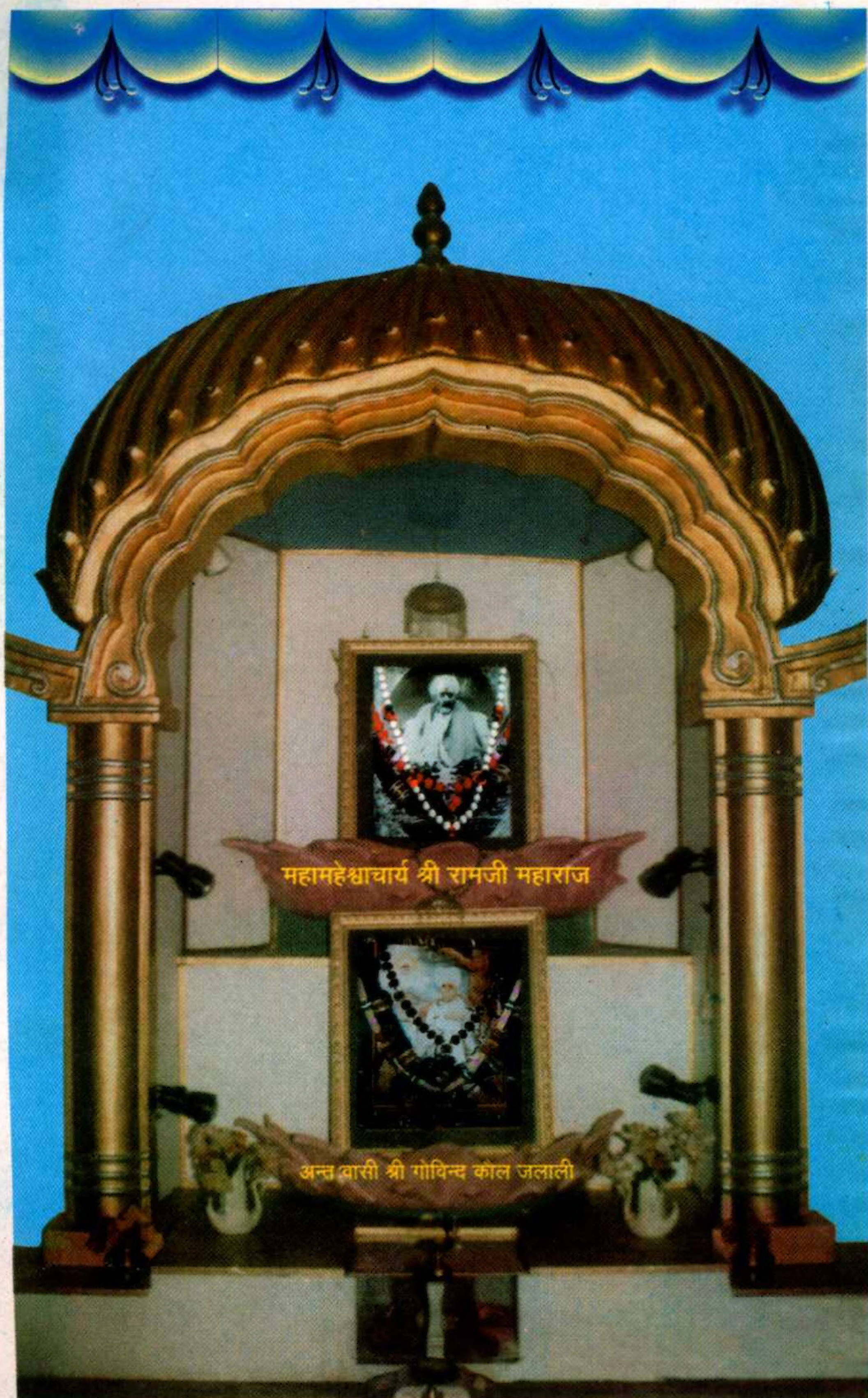
अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं बाह्मभ्यन्तरतः शुचिः ।।

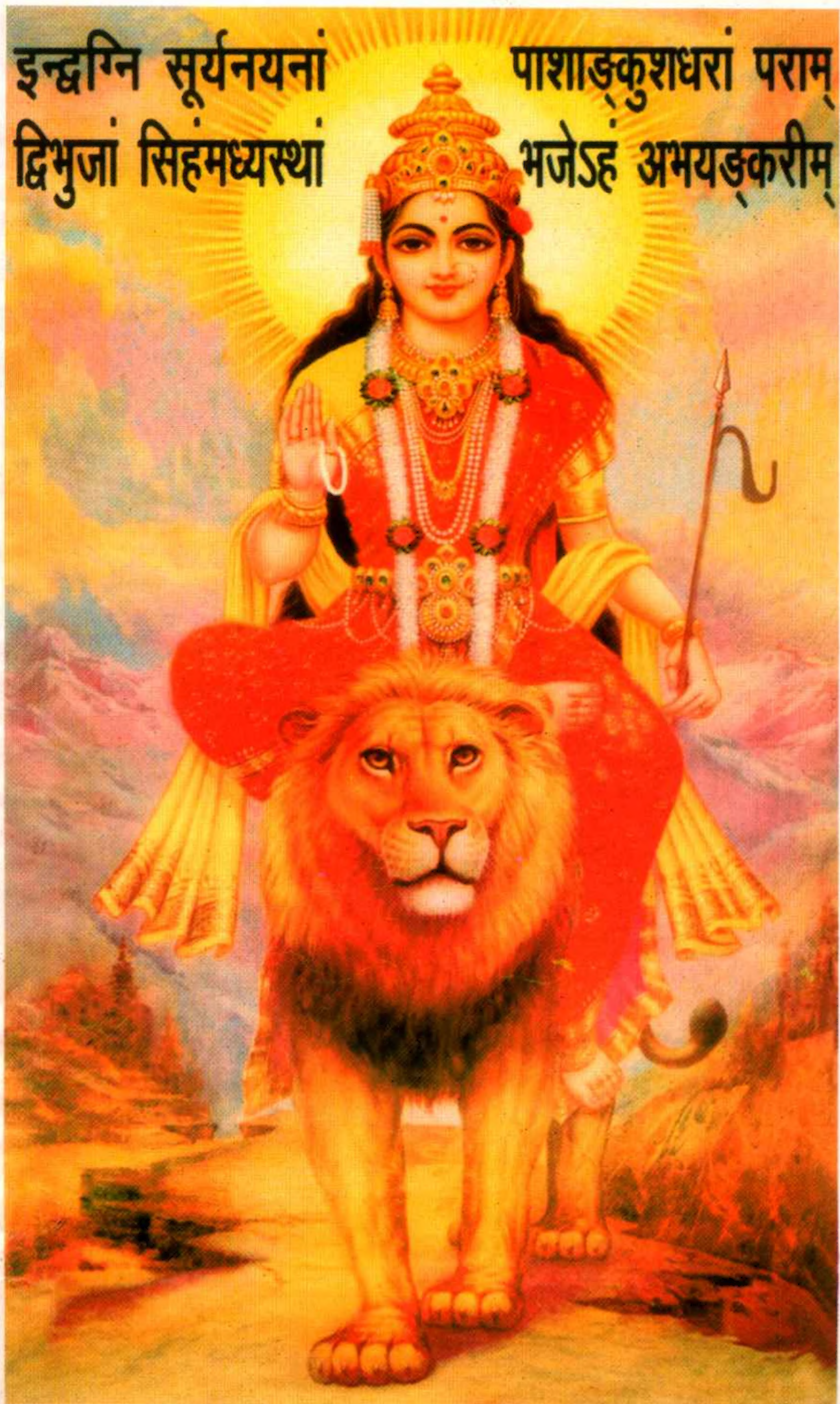
तत्व शुद्धि के लिए नीचे लिखे मंत्रों से चार बार आचमन करें।

1. ॐ आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा
2. ॐ विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा
3. ॐ शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा
4. ॐ सर्व तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा

(अब तर्पण कीजिए)

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी कवचस्तोत्र महामंत्रस्य शची पुरन्दरऋषिः अनुष्टुपछन्दः श्री इन्द्राक्षी भगवती देवता, लक्ष्मीः बीजं, भुवनेश्वरी शक्ति, माहेश्वरी कीलकम्, गायत्री सावित्री सरस्वती कवचं आत्मनः वाङ्-मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थम् श्री इन्द्राक्षी भगवती प्रसन्नार्थम् कवचस्तोत्र महामंत्रस्य पाठे (जपे) विनियोगः।


महामहेश्वाचार्य श्री रामजी महाराज
अन्त वासी श्री गोविन्द कौल जलाली


इन्द्वग्नि सूर्यनयनां पाशाङ्कुशधरां पराम्
द्विभुजां सिहंमध्यस्थां भजेऽहं अभयङ्करीम्

श्री इन्द्राक्षीजयचक्रम



(अथ करन्यासः)

1.	ॐ	महालक्ष्म्यै	अंङुष्ठाभ्यां	नमः
2.	ॐ	**भुवनेश्वर्यै**	तर्जनीभ्यां	नमः
3.	ॐ	**माहेश्वर्यै**	मध्यमाभ्यां	नमः
4.	ॐ	वज्रहस्तायै	अनामिकाभ्यां	नमः
5.	ॐ	सहस्त्रनयनायै	कनिष्ठकाभ्यां	नमः
6.	ॐ	इन्द्राक्ष्यै	करतलकरपृष्टाभ्यां	नमः

(अथ अङ्गन्यासः)

1.	ॐ	महालक्ष्म्यै	हृदयाय	नमः
2.	ॐ	**भुवनेश्वर्यै**	शिरसे	स्वाहा
3.	ॐ	**माहेश्वर्यै**	शिखायै	वषट्
4.	ॐ	वज्रहस्तायै	कवचायै	हुँ
5.	ॐ	सहस्त्रनयनायै	नेत्राभ्यां	वौषट्
6.	ॐ	इन्द्राक्ष्यै	अस्त्राय	फट्

निम्नलिखित मंत्र से प्राणायाम कीजिए

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इन्द्राक्षी क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ स्वाहा

(ध्यानम्)

ॐ इन्द्राक्षी द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रधरां शुभाम्

वामे वज्रधरां सव्यहस्तेऽभयवर प्रदाम् ।।

सहस्त्रनेत्रां सूर्याभां नानालङ्कार भूषिताम्

प्रसन्नवदनां नित्यामप्सरोगणसेविताम् ।।

श्री दुर्गां सौम्यवदनां पाशाङ्कुशधरां पराम्

त्रैलोक्यमोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम् ।।

इन्द्वग्नि सूर्यनयनां पाशाङ्कुशधरां पराम् ।

द्विभुजां सिंहमध्यस्थां भजेऽहं अभयङ्करीम् ।।

शचीपतये विद्महे **–पाकशासनाय धीमहि –**

तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात् ।। (तीन बार पढ़िए)

नीचे दिए गए मंत्र से तीन बार अपने सिर के इर्द-गिर्द दायें से बायें की और हाथ फेरिएः-

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धनम्

पंचोपचार, अर्थात नीचे लिखे मंत्रों से गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य इत्यादि देवी के प्रति चढ़ाईए। (यह उपचार द्रव्यों के अभाव में मानसिक भी हो सकते हैं।)

ॐ लं पृथिव्यात्मिकायै इन्द्राक्षी भगवत्यै गन्धं समर्पयामि ।

ॐ हं आकाशात्मिकायै इन्द्राक्षी भगवत्यै पुष्पै पूजयामि ।

ॐ यं वाय्वात्मिकायै इन्द्राक्षी भगवत्यै धूपं अर्पयामि ।

ॐ रं अग्न्यात्मिकायै इन्द्राक्षी भगवत्यै दीपं दर्शयामि ।

ॐ वं अमृतात्मिकायै इन्द्राक्षी भगवत्यै अमृतं महानैवेद्यम निवेदयामि ।

ॐ सं सर्वात्मिकायै इन्द्राक्षी भगवत्यै सर्वोपचारं समर्पयामि ।।

देवी के निम्नलिखित मूल मंत्र के 108 जप कीजिए ।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इन्द्राक्षी क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ स्वाहा

अथ इन्द्राक्षी कवचम्

इन्द्राक्षी पूर्वतः पातु पात्वाग्नेय्यां दशेश्वरी ।
कौमारी दक्षिणे पातु नैऋत्यां पातु पार्वती ।।
वाराही पश्चिमे पातु वायव्ये नारसिंह्यपि ।
उदीच्यां कालरात्री मामैशन्यां सर्वशक्तयः ।।
भैरव्यूर्ध्वं सदापातु पात्वधो वैष्णवी सदा ।
एवं दशदिशो रक्षेत् सर्वाङ्ग भुवनेश्वरी ।।

ॐ नमो भगवत्यै इन्द्राक्ष्यै महालक्ष्म्यै सर्वजन वशकर्य्यै सर्वदुष्टग्रहस्तम्भिन्यै स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति पिङ्गलभैरवि त्रैलोक्यलक्ष्मि त्रैलोक्यमोहिनि इन्द्राक्षी मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति भद्रकालि महादेवि कृष्णवर्णे तुङ्गस्तनि शूर्पहस्ते कवाटवक्षःस्थले कपालधरे परशुधरे चापधरे विकृतरुपधरे विकृतरुपे महाकृष्णसर्पयज्ञोपवीतिनि भस्मोद्धवलितसर्वगात्री इन्द्राक्षी मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति प्राणेश्वरि पद्मासने सिंहवाहने महिषासुरमर्दिनि उष्णज्वर, पित्तज्वर, वातज्वर, श्लेष्मज्वर, कफज्वर, आलापज्वर, संनिपातज्वर, कृत्रिमज्वर, कृत्यादिज्वर, एकाह्निकज्वर, द्वयाह्निकज्वर, त्र्याह्निकज्वर, चतुराह्निकज्वर, पञ्चाह्निकज्वर, पक्षज्वर, मासज्वर, षण्मासज्वर, संवत्सरज्वर, सर्वाङ्गज्वरान् नाशय नाशय, हर हर, जहि जहि, दह दह, पच पच, ताडय ताडय, आकर्षय आकर्षय, विद्विषः स्तम्भय स्तम्भय, मोहय मोहय, उच्चाटय उच्चाटय, हुं फट् स्वाहा ॐ ह्रीं।

ॐ नमो भगवति प्राणेश्वरि पद्मासने लम्बोष्ठि कम्बुकण्ठिके कलिकाम्रुपिणि परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्र प्रभेदिनि प्रतिपक्षविध्वंसनि परबल दुर्गविमर्दिनि शुत्रुकरच्छेदिनि सकलदुष्ट ज्वरनिवारिणि भूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षस यक्ष यमदूत शाकिनी डाकिनी कामिनी स्तम्भिनी मोहिनी वशंकरी कुक्षिरोग शिरोरोग नेत्ररोग क्षयापस्मार कुष्टादि महारोग निवारिणि मम सर्वरोगान् नाशाय नाशाय

ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः फट् स्वाहा ।

ॐ ऐं श्रीं हुं दुं इन्द्राक्षी मां रक्ष रक्ष, ममशत्रून् नाशय नाशय, जलरोगान् शोषय शोषय, दुःखव्याथीन् स्फोटय स्फोटय, क्रुरानरीन् भञ्जय भञ्जय, मनोग्रन्थि प्राणग्रन्थि शिरोग्रन्थीन् काटय काटय, इन्द्राक्षी मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति माहेश्वरी महाचिंतामणि दुर्गे सकल सिद्धेश्वरि सकल जन मनोहारिणि काल कालरात्र्यनले अजिते अभये महाघोररूपे विष्णुरूपिणि मधुसूदनि महाविष्णुस्वरूपिणि नेत्रशूल कर्णशूल कटिशूल पक्षशूल पाण्डुरोगकामलादीन् नाशय नाशय वैष्णवि ब्रह्मास्त्रेण

विष्णुचक्रेण रुद्रशूलेन यमदण्डेन वरुणपाशेन वासव-वज्रेण सर्वानरीन् भञ्जय भञ्जय, यक्षग्रह राक्षसग्रह स्कन्दग्रह विनायकग्रह बालग्रह चौरग्रह कूष्माण्डग्रहादीन् निगृह्ण निगृह्ण, राजयक्ष्म क्षयरोगतापज्वर निवारिणि मम सर्वज्वरान् नाशय नाशय, सर्वग्रहान् उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा ।।

(इति कवचं समाप्तम्)

श्री इन्द्र उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता ।
गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नीतिविश्रुता ॥
कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा ।
गायत्री सा च सावित्रि ब्रह्माणी बह्मवादिनी ॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला ।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिः तपस्विनी ॥
मेघश्यामा सहस्त्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररुपा महाबला ।।
आनन्दा भद्रजानन्दा रोगहर्त्री शिवप्रिया ।
शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ॥

इन्द्राणी चेन्द्ररुपा च इन्द्रशक्तिः परायणा ।

महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ॥

वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ।

श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मी सरस्वती ॥

अनन्ता विजया पूर्णा मनस्तोषाऽपराजिता ।

भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिकाऽशिवा

शिवा भवानी रुद्राणी शङ्करार्धशरीरिणी ।

सदा संमोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ॥

त्रिनेत्रा त्रिपुराराध्या सर्वात्मा कमलात्मिका ।

चण्डी भगवती भद्रा सिद्धिबुद्धि समन्विता ॥

एकाक्षरी पराब्रह्मी स्थूलसूक्ष्म प्रवर्तिनी ।

नित्या सकलकल्याणी भोगमोक्ष प्रदायिनी ॥

ऐरावतगजारुढा वज्रहस्ता वरप्रदा ।

भ्रामरी काञ्चिकामाक्षी क्वणन्माणिक्य नूपुरा ॥

त्रिपाद्भस्मप्रहरणा त्रिशिरारक्तलोचना ।

शिवा च शिवरूपा च शिवभक्ति परायणा ॥

मृत्युञ्जया महामाया सर्वरोगनिवारिणी ।

ॐ एन्द्री देवी सदा काले शांतिमाशुकरोतु मे ॥

फलश्रुतिः

एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यसुखसम्पत्तिकारकम् ॥
क्षयापस्मारकुष्ठादि तापज्वरनिवारकम् ।
शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात् ॥
आवर्तयेत्सहस्त्रेण लभते वाञ्छितं फलम् ।
राजावश्यमवाप्नोति सत्यमेव न संशयः ॥
लक्ष्यमेकं जपेद्यस्तु साक्षाद्देवी स पश्यति ।
त्रिकालं पठते नित्यं धनधान्य च विविर्धनम् ॥
अर्धरात्रे पठेत् नित्यं मुच्यते व्याधिबन्धनाद् ।
ऐन्द्रस्तोत्रमिदं पुण्यं जपे तु फलवर्धनम् ॥
विनाशाय तु रोगाणामपमृत्यु हराय च ।
राज्यार्थी लभते राज्यं धनार्थी विपुलं धनम् ॥
इच्छाकामं तु कामार्थी धर्मार्थी धर्ममव्ययम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी परमं पदम् ॥
इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः ॥
या माया मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी ।
या धूम्रेक्षण चण्डमुण्डमथनी या रक्तबीजाशिनी ॥
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्धिलक्ष्मीः परा ।
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु माहेश्वरी ॥

जप्तं पापहरं नुतं बलकरं सम्पूजितं श्रीकरम् ।
ध्यातं मानकरं स्तुतं धनकरं संभाषितं सिद्धिदम् ॥
गीतं सुन्दरि वाञ्छितं प्रतनुते ते पाद पद्मद्वयं ।
भक्तानां भवभीति भञ्जनकरं सिद्धघ्नष्टदं पातु नः ॥

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी ।
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी ॥
शक्तिः शंकर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी ।
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माताकुमारीत्यसि ॥

तर्पण कीजीए

अनेन मन्त्रपाठेन आत्मनोवाड्-मनः कायोपार्जित
पापनिवारणार्थं श्रीइन्द्राक्षी देवी प्रीत्यर्थं भगवती
अमा कामा चार्वङ्गी टंङ्कधारिणी तारा पार्वती यक्षिणी
श्रीशारिकाभगवती श्रीशारदाभगवती श्रीमहाराज्ञीभगवती
श्रीज्वालाभगवती व्रीडाभगवती वैखरीभगवती वितस्ताभगवती
गङ्गाभगवती यमुनाभगवती कालिकाभगवती सिद्धिलक्ष्मी
महालक्ष्मी महात्रिपुरसुन्दरी सहस्त्रनाम्नीदेवी भवानी सपरिवारा
सवाहना सायुधा साङ्गा प्रीयतां प्रीत्यास्तु ।

साष्टाङ्ग प्रणाम करके नीचे दीये गये मन्त्र से बायें से दायें की ओर अपने सिर के उपर हाथ फेरें

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्विमोकः

(शेष तर्पन-जल से शरीर का मार्जन दे दें)

अथ श्री इन्द्राक्षी नामावली

श्री इन्द्र उवाच

1.	इन्द्राक्षी नाम्न्यै देव्यै	18.	कृष्णायै
2.	देवतैः समुदाहृतायै	19.	पिङ्गलायै
3.	गौर्यै	20.	अग्निज्वालायै
4.	शाकम्भर्यै	21.	रौद्रमुख्यै
5.	देव्यै	22.	कालरात्र्यै
6.	दुर्गानाम्नीति विश्रुतायै	23.	तपस्विन्यै
7.	कात्यायन्यै	24.	मेघश्यामायै
8.	महादेव्यै	25.	सहस्त्राक्ष्यै
9.	चण्द्रघण्टायै	26.	विष्णुमायायै
10.	महातपसे	27.	जलोदर्यै
11.	गायत्र्यै	28.	महोदर्यै
12.	सावित्र्यै	29.	मुक्तकेश्यै
13.	ब्रह्माण्यै	30.	घोररुपायै
14.	ब्रह्मावादिन्यै	31.	महाबलायै
15.	नारायण्यै	32.	आनन्दायै
16.	भद्रकाल्यै	33.	भद्रजानन्दायै
17.	रुद्राण्यै	34.	रोगहर्त्र्यै

35.	शिवप्रियायै	54.	लक्ष्म्यै
36.	शिवदूत्यै	55.	सरस्वत्यै
37.	कराल्यै	56.	अनन्तायै
38.	प्रत्यक्षपरमेश्वर्यै	57.	विजयायै
39.	इन्द्राण्यै	58.	पूर्णायै
40.	इन्द्ररुपायै	59.	मनस्तोषायै
41.	इन्द्रशक्तिपरायणायै	60.	अपराजितायै
42.	महिषासुरसंहर्त्र्यै	61.	भवान्यै
43.	चामुण्डायै	62.	पार्वत्यै
44.	गर्भदेवतायै	63.	दुर्गायै
45.	वाराह्यै	64.	हैमवत्यै
46.	नारसिंह्यै	65.	अम्बिकायै
47.	भीमायै	66.	शिवायै
48.	भैरवनादिन्यै	67.	शिवाभवान्यै
49.	श्रुत्यैः	68.	रुद्राण्यै
50.	स्मृत्यैः	69.	शङ्करार्धशरीरिण्यै
51.	धृत्यैः	70.	सदा सम्मोहिनी देव्यै
52.	मेधायै	71.	सुन्दर्यै
53.	विद्यायै	72.	भुवनेश्वर्यै

73.	त्रिनेत्रायै	92.	वरप्रदायै
74.	त्रिपुरायै	93.	भ्रामर्यै
75.	आराध्यायै	94.	काञ्चिकामाक्ष्यै
76.	सर्वात्मने	95.	क्वणन्माणिक्यनूपुरायै
77.	कमलात्मिकायै	96.	त्रिपाद्भस्मप्रहरणायै
78.	चण्डयै	97.	त्रिशिरारक्तलोचनायै
79.	भगवत्यै	98.	शिवायै
80.	भद्रायै	99.	शिवरूपायै
81.	सिद्ध्यै	100.	शिवभक्तयै
82.	बुद्ध्यै	101.	परायणायै
83.	समन्वितायै	102.	मृत्युञ्जयायै
84.	एकाक्षर्यै	103.	म[redacted]हामायायै
85.	पराब्रह्मण्यै	104.	सर्वरोगनिवारिण्यै
86.	स्थूलसूक्ष्मप्रवर्तिन्यै	105.	ऐन्द्रियै
87.	नित्यायै	106.	देव्यै
88.	सकलकल्याण्यै	107.	सदायै
89.	भोगमोक्षप्रद[redacted]यन्यै		॥ तेजोऽसि ॥
90.	ऐरावतगजारूढायै		
91.	वज्रहस्तायै	108.	शांतिमाशुकर्त्र्यै